IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

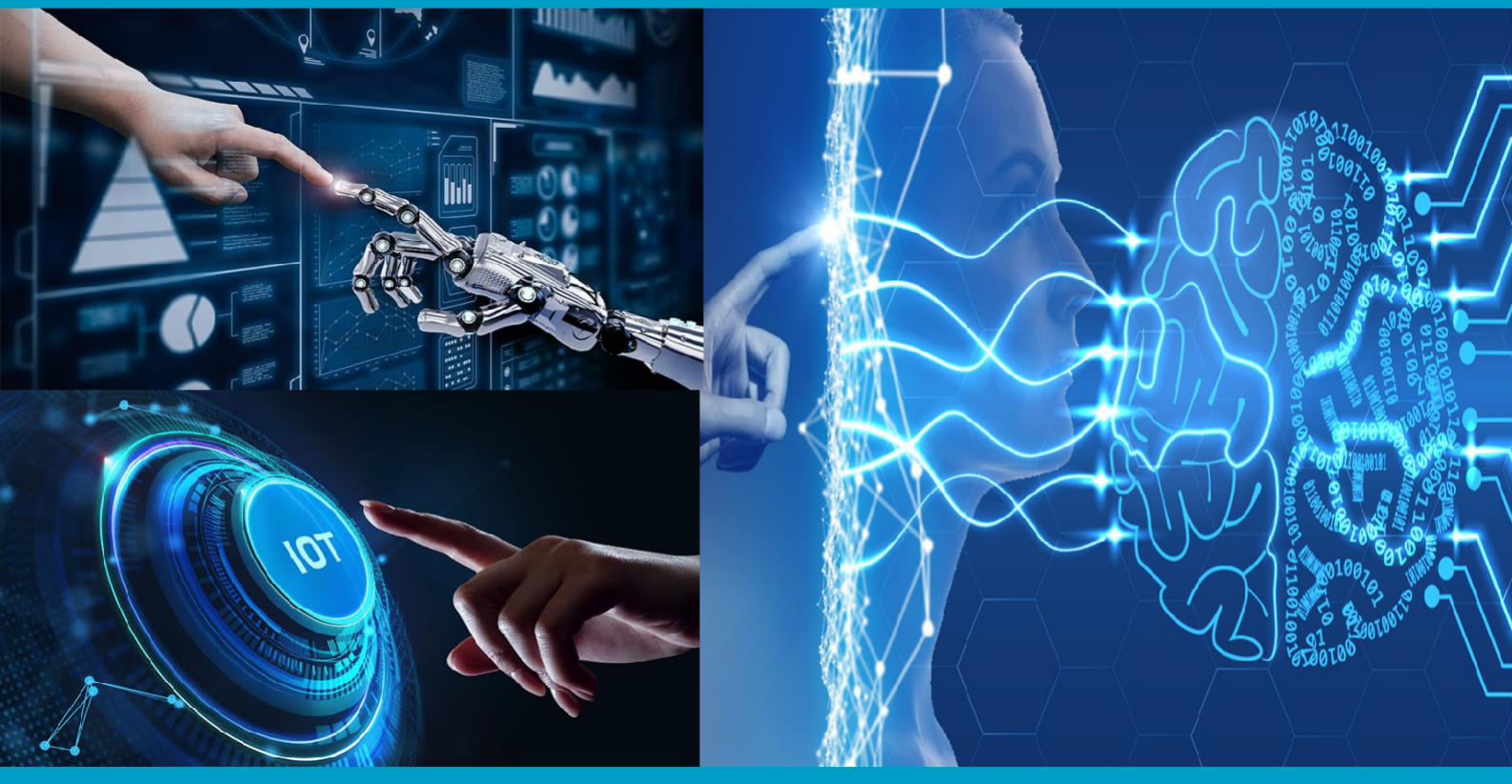

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

|ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912030 |

राजस्थान में भक्ति -आन्दोलन और उनका प्रभाव

Pukhraj

Assistant Professor, Dept. of History, Govt. College, Pipar City, Jodhpur, Rajasthan, India

सार

मध्यकालीन युग के अंत में उत्तर में इसका प्रसार शुरू हुआ जब उत्तर भारत इस्लामी शासन के अधीन था। राजस्थान में भक्ति आंदोलन की मुख्य अवधि 16वीं शताब्दी के प्रारंभ से 18वीं शताब्दी के अंत तक है। एक ईश्वर में विश्वास रखना ही भक्ति आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता है। एक भक्त प्रेम और भक्ति से भगवान की पूजा कर सकता है।

परिचय

मध्यकालीन भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना भक्ति आन्दोलन का प्रबल होना था। कुछ विद्वानों का मानना है कि भक्ति आन्दोलन इस्लाम की देन था, किन्तु दर्किक्षण भारत में यह आन्दोलन छठी शताब्दी से नवीं शताब्दी के बीच प्रारम्भ हो गया था। भक्ति का प्रारम्भ ही दक्षिण भारत से माना जाता है, और यहाँ के आलावार सन्तों ने इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया था। बाद में रामानुज ने इस आन्दोलन को दार्शनिक रुप प्रदान किया। अत: यह धारणा मि है कि भक्ति आन्दोलन इस्लान की देन है। चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ में उत्तर भारत में इस आन्दोलन को प्रबल बनाने का श्रेय रामानंद को जाता है। रामानंद के १२ शिष्य थे। वे अपने शिष्यों के साथ अपने मत का प्रचार करने के लिए उत्तरी भारत का भ्रमण करने लगे। उनके इस प्रचार का राजस्थान पर भी प्रभाव किया। उनके शिष्यों में कबीर प्रमुख थे। कबीर ने अपने विचारों से राजस्थान को भी प्रभावित किया। इसके फलस्वरुप राजस्थान में भी कई धर्म प्रचारकों का आविर्भाव हुआ। उन्होंने भी भारत के अन्य सन्तों की भाँति परम्परागत धर्म में व्याप्त दोषों को दूर करने का हर संभव प्रयास किया। परिणामस्वरुप राजस्थान में भी धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में मुसलमानों ने राजस्थान पर निरन्तर आक्रमण किया। उन्होंने न केवल भारत का धन लूटा, बल्कि इस्लाम धर्म का प्रचार भी किया। उनका प्रमुख उद्देश्य भारत में अपनी सत्ता स्थापित करके यहाँ की सम्पत्ति को लूटना एवं इस्लाम धर्म का प्रचार करना था। इसलिए मुसलमानों ने सत्ता में आते ही हिन्दू मंदिरों को नष्ट करना एवं हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाना प्रारम्भ कर दिया। मुसलमानों ने राजस्थान में अजमेर को अपना केन्द्र बनाया। यहाँ से ही उन्होंने जालौर, नागौर, चित्तौड़ एवं मांडल की ओर प्रस्थान किया था। वहाँ भी उन्होंने मंदिरों को गिराना एवं मूर्तियों को नष्ट करना जारी रखा। मुसलमानों के धार्मिक अत्याचारों ने हिन्दुओं को अपनी धार्मिक आस्था से डिगा दिया। जब ईश्वर ने उनकी रक्षा नहीं की, तो ऐसी स्थिती में वे निराशा के सागर में निमग्न हो गये। ऐसे वातावरण में धर्म सुधारकों ने धर्म में व्याप्त बुराईयों को दूर किया और निराश हिन्दुओं के दिल में अपने धर्म के प्रति आस्था का पुन: संचार किया। मुसलमानों ने प्रारम्भ में आक्रमणकारी के रुप में धर्म के नाम पर अत्यधिक अत्याचार किए। अत: हिन्दुओं में उनके प्रति रोष एवं आक्रोश की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक था, परन्तु जब मुसलमानों को यहाँ रहते हुए काफी समय व्यतीत हुआ, तो उनका धार्मिक जोश भी ठंडा पड़ गया था। दोनों सम्प्रदायों में विचारों का आदान- प्रदान होने लगा और दोनों ने एक दूसरे को समझने का प्रयत्न किया।

राजस्थान के शासकों ने भी मुस्लिम धर्माधिकारियों को सम्मानित करना प्रारम्भ कर दिया। महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने अजमेर की दरगाह को चार गाँव जागीर के रुप में प्रदान किये थे। मारवाड़ नरेश अजीतसिंह ने भी दरगाह के खर्चे के लिए कुछ अनुदान की राशि निश्चित कर दी थी। इस्लाम के सरल एवं सादगीपूर्ण विचारों ने हिन्दू धर्म को भी प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरुप हिन्दू धर्म के कई समाज सुधारकों ने जाति - पांति, ऊँच - नीच एवं छुआछूत के भेदभावों का विरोध किया। इस प्रकार की विचारधारा से राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन की पृष्टभूमि तैयार हुई। सूफी मत सुन्नी मत से अधिक उदार तथा सरल है। सूफी सन्तों ने प्यार एवं मधुर वाणी के माध्यम से अपने विचार हिन्दुओं तक पहुँचाए। वे धार्मिक आडम्बरों में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने अल्लाह तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए संगीत (कव्वाली) का सहारा लिया। हिन्दू सन्त सूफी सन्तों के विचार से काफी प्रभावित हुए और उन्होंने भी धर्म के बाहरी आडम्बरों की आलोचना करके कीर्तन पर अधिक जोर देना प्रारम्भ कर दिया। सूफी सन्तों तथा मुस्लिम दरवेशों ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सामंजस्य उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। सत्रहवीं शताब्दी में सृजित नवीन साहित्यिक ग्रन्थों ने धार्मिक आन्दोलन को बल प्रदान किया। हरि बोल चिन्तामणि व विप्रबोध मानक साहित्यकारों ने अपने साहित्यिक ग्रन्थों के माध्यम से हृदय की शुद्धि पर विशेष बल दिया। विप्रबोध का मानना था कि हरि सर्वोपरि है और उसे प्रार्थना के माध्यम से प्राप्त

|ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912030 |

किया जा सकता है। वह पंडितों एवं शेखों का विरोधी था। उसका मानना था कि ये लोग धर्म को मि आडम्बरों से ही ग्रसित करते हैं।"पश्चिमाद्रिस्तोत्र " नामक ग्रन्थ में राम, रहीम, गोरख, पीर व अल्लाह को एक ही शक्ति के विभिन्न नाम बताये गये हैं। इन साहित्यिक ग्रन्थों की रचना का परिणाम यह हुआ कि राजस्थान के लोगों के धार्मिक विचार उदार हो गये। अब हिन्दुओं ने परम्परागत धार्मिक विचारों के दायरे से अपने को मुक्त कर दिया और नवीन उदार धार्मिक मान्यताओं को महत्व देना प्रारम्भ कर दिया।

विचार-विमर्श

राजस्थान के इस धार्मिक आन्दोलन की प्रवृत्ति हमें यहाँ के सिद्ध पुरुषों के चिंतन में भी स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होती है। ऐसे व्यक्ति जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन त्याग तथा बलिदान के साथ समाज सेवा एवं धर्म प्रचार में व्यतीत कर दिया था, उन्हें सिद्ध पुरुष कहा जाता है। ऐसे सिद्ध पुरुषों को अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त थीं, अत: जनता ने उन्हें देवत्व की भाँति पूजना शुरु कर दिया। ऐसे सिद्ध पुरुषों में गोगाजी, पाबूजी, तेजाजी एवं मल्लिनाथ आदि के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। गोगाजी ने यवनों के शिकंजे से गायों को छुड़वाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया था। उनकी स्मृति में भाद्रपद की कृष्णा नवमी को गोगा नवमी का मेला भरता है।

इसी प्रकार तेजाजी ने जाटों की गायों को मुक्त करवाने में अपने प्राण दांव पर लगा दिये थे। वे खड़नवाल गाँव के निवासी थे। भादो शुक्ला दशमी को तेजाजी का पूजन होता है। तेजाजी का राजस्थान के जाटों में महत्वपूर्ण स्थान है। अन्य लोक देवों में पाबूजी, मल्लिनाथ एवं देवजी के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने अपने आत्म - बलिदान तथा सदाचारी जीवन से अमरत्व प्राप्त किया था। उन्होंने अपने धार्मिक विचारों से जनसाधारण को सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया और जनसेवा के कारण निष्ठा अर्जित की। उन्होंने जनसाधारण के हृदय में हिन्दू धर्म के प्रति लुप्त विश्वास को पुन: जागृत किया। इस प्रकार लोकदेवों ने अपने सद्कार्यों एवं प्रवचनों से जन - साधारण में नवचेतना जागृत की, लोगों की जात - पांत में आस्था कम हो गई। अत: उनका इस्लाम के प्रति आकर्षण दिन - प्रतिदिन कम होता गया। इस प्रकार इन लोक देवताओं ने धर्म सुधार की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

परिणाम

हिन्दू समाज तथा धर्म में कुरीतियों, आडम्बरों एवं पाखण्डों का बोलबाला था, जिसके कारण जनसाधारण अन्धविश्वास का शिकार बना हुआ था। इस समय हिन्दू समाज अनेक जातियों एवं उपजातियों में विभक्त हो चुका था एवं कई नयी जातियाँ भी बन चुकी थीं। इस समय निम्न जातियों की दशा बहुत शोचनीय थी। इनकी बस्तियाँ गाँव के बाहर होती थीं। स्वर्ण जाति के लोग इनके हाथ का छुआ पानी नहीं पीते थे। परिणामस्वरुप निम्न जातियों के लोग इस्लाम की ओर आकर्षित हुए। इस स्थिति से बचने के लिए एकमात्र उपाय यही था कि समाज में व्याप्त दोषों को दूर किया जाए।

"इन सन्तों के द्वारा इस नवजागरण में आत्मसम्मान तथा सर्वसाधारण सन्त साधना जैसे रहस्यमय एवं गूढ़ सिद्धांतों की व्याख्या बोलचाल की भाषा में सर्वसाधारण के लिए की जाने लगी। जो अभी तक ब्राह्मण एवं उच्च वर्ग तक ही सीमित थी। अब उन गूढ़ एवं रहस्यमय सिद्धांतों को अनपढ़ व साधारँ ज्ञान वाले व्यक्ति समझने लगे, जिससे ये पंथ लोकप्रिय हुए।"

"यह युग न केवल राजस्थान की संस्कृति का, बल्कि भारत की संस्कृति का एक उज्जवल युग है। हमारी स्मृति में धार्मिक जीवन का कोई ऐसा उज्जवल पक्ष इसके पूर्व इतना नैसर्गिक और फलद नहीं हो सका।"

समय, काल राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन संस्कृति की एक बहुपक्षीय और महान घटना थी।

मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के उदय के निम्नलिखित कारण थे--

1. जाति व्यवस्था का जटिल होना

मध्यकालीन भारत में जाति व्यवस्था का स्वरूप बहुत जटिल हो चुका था। उच्च जातियों खुद को श्रेष्ठ मानकर निम्न जातियों पर भीषण अत्याचार करती थी जिससे उनमें व्यापक असंतोष व्याप्त हुआ। ऐसी स्थिति में भक्ति मार्ग ने सबके लिए मार्ग खोल दिया। इस आन्दोलन के संचालक ऊंच-नीच की भावना के सर्वथा विरूद्ध थे।

|ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912030 |

2. मुस्लिम अत्याचार

इस समय मुस्लिमों शासकों द्वारा हिन्दू पर कभी अत्याचार किया जाता था। इन अत्याचारों से मुक्ति पाने हेतु हिन्दू जनता एक सुरक्षित स्थान की खोज करने लगी थी जो ईश्वर भक्ति के द्वारा ही उन्हें मिल सकता था। एक विद्वान के मुताबिक ''जब मुसलमान हिन्दूओं पर अत्याचार करने लगे, तो हिन्दू निराश होकर उस दीनरक्षक भगवान से प्रार्थना करने लगे।''

3. इस्लाम का प्रभाव

भक्ति आन्दोलन के उदय का कारण इस्लाम धर्म का प्रभाव था। लेकिन डॉ. भण्डारकर ने इसका खण्डन करते हुए लिखा है कि ''भक्ति आंदोलन श्री मद्भगावत गीता की शिक्षाओं पर आधारित था।''

4. मन्दिर व मूर्तिया का विनाश

मध्यकाल में मुस्लिम आक्रमाणकारी मन्दिर में लुटपाट के लिए मन्दिरों में तोड़ाफौडी और मूर्तियों का विनाश करते थे। ऐसी स्थिति में हिन्दू स्वतन्त्र रूप में मन्दिर में उपासना अथवा मूर्ति पूजा नही कर पाते थे। इसलिए वे भक्ति एंव उपासना के माध्यम से ही मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करने लगे।

5. ब्राह्मणवाद का जटिल होना

उस समय हिन्दू धर्म का स्वरूप बहुत जटिल हो गया था। याज्ञिक कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ, उपवास आदि धार्मिक क्रियाओं की जटिलता को सर्वसाधारण सरलता से नहीं निभा सकती थी। अतः निम्न जाति के व्यक्ति इस्लाम धर्म ग्रहण करने लगे थे।

भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषतांए निम्नलिखित है--

1. भक्ति आंदोलन के सन्तों ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया।

2. इसके कुछ सन्तों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया।

3. भक्ति आंदोलन के नेता सन्यास मार्ग पर बल नहीं देते थे। उनका कहना था कि यदि मानव का आचार-विचार एंव व्यवहार शुद्ध हो, तो वह गृहस्थ जीवन में रहकर भी भक्ति कर सकता है।

4. भक्ति आंदोलन के संत सारे मनुष्य मात्र को एक समझते थे। उन्होनें धर्म, लिंग, वर्ण व जाति आदि के भेदभाव का विरोध किया।

5. यह आन्दोलन मुख्य रूप से सर्वसाधारण का आन्दोलन था। इसके सारे प्रचारक जनसाधारण वर्ग के ही लोग थे।

6. भक्ति आन्दोलन के प्रचारकों ने अपने विचारों का प्रचार जनसाधारण की भाषा तथा प्रचलित साधारण बोली में किया।

7. यद्यपि यह आन्दोलन विशेष रूप से धार्मिक आन्दोलन था, लेकिन इसके अनेक प्रवर्तकों ने सामाजिक क्षेत्र में विद्यमान कुरीतियों को दूर करने की कोशिश की।

8. भक्ति आदोंलन के सारे नेता विश्व बन्धुत्व की भावना एंव एकेश्वरवाद के समर्थक थे।

|ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912030 |

9. भक्ति आंदोलन के सन्तों ने धार्मिक अन्धविश्वासों तथा बाह्म आडम्बरों का विरोध कर हिन्दू धर्म को सरल एंव शुद्ध बनाने का प्रयत्न किया। उन्होनें चरित्र की शुद्धता एवं आचरण की पवित्रता पर बल देकर सच्चे हृदय से भक्ति करना ही मुक्ति का साधन बताया।

निष्कर्ष

भक्ति आन्दोलन के निम्न लिखित परिणाम हुए--

1. पुरोहित एंव ब्राह्मणवाद को ठोस

भक्ति आंदोलन के कारण पुरोहित तथा ब्राह्मणवाद को गहरी ठेस पहुंची, जिससे स्पष्ट हुआ कि हर व्यक्ति चाहे वह अछुत हो ,भक्ति द्वारा ईश्वर को पा सकता है। इस तरह धर्म से ब्राह्मणों का एकाधिकार समाप्त हो गया।

2. दलितों का उद्धार

भक्ति आन्दोलन के कारण दलितों को अपने विकास का मौका मिला। यह आन्दोलन सामाजिक विषमता, दलितों का शोषण तथा उनकी सोचनीय दशा को दूर करनें मे सहायक सिद्ध हुआ।

3. धार्मिक सहिष्णुता का प्रादुर्भाव

इससे सारे धर्मो एंव जातियों में धार्मिक सहिष्णुता का प्रादुर्भाव हुआ। जिससे शान्ति, समृद्धि एंव सांस्कृतिक एकता स्थापित हुई।

4. वर्ण व्यवस्था का अंत

भक्ति आंदोलन ने हिन्दूओं की वर्ण व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर पतन की ओर अग्रसर किया, जिससे ब्राह्मणों धर्म की प्रतिष्ठा धूल में मिल गयी तथा उनके जातीय अभिमान को गहरा आघात पहुंचा। इसने मोक्ष प्राप्ति का मार्ग हर व्यक्ति के लिए खोल दिया जिससे समाज में शूद्रों को भी ब्राह्मणों के समकक्ष स्थान प्राप्त हो गया।

5. कर्मकाण्डों का ह्रास

भक्ति आंदोलन से कर्मकाण्डों एंव बाह्राडम्बरों को गहरी क्षति पहुंची। आंदोलन के कुछ संतों ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर उनका प्रबल शब्दों में खण्डन किया अतः समाज में कर्मकाण्डों का ह्रास होना शुरू हो गया।

6. सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना

इस आन्दोलन में मुख्य सन्त नानक देव ने सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना की। इस सम्प्रदाय ने भारतीय इतिहास में कई वीरतापूर्ण कार्य किए।

यूरोप और भारत में धार्मिक पुनर्जागरण की लहर आरम्भ हो चुकी थी और इसका दोनों देशों में प्रमुख कारण इस्लाम का आक्रमण और इससे अपनी धर्म संस्कृति की रक्षा करना था। इस्लाम के धर्मान्ध शासकों ने मंदिरों पर आक्रमण किये, धर्मान्तरण कियें तथा हिन्दू समाज कुछ न कर सका क्योकि वह स्वंय अपनी ही विकृतियों के कारण निर्बल और निराश था। भक्त संतों ने आडम्बर त्याग, मूर्ति-पूजा का विरोध, एकेश्वरवाद, जाति-व्यवस्था की आलोचना, हिन्दू जाति में एकता, लोकभाषा और मानव सेवा आदि

|ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912030 |

विशेषताओं को अपनाकर भारतीय समजा को शक्तिशाली बनाने में सफलता प्राप्त की। भक्ति आंदोलन के प्रमुख सन्त रामानुजाचार्य, रामानन्द, चैतन्य, कबीर, वल्लभाचार्य आदि थे।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Johar, Surinder (1999). Guru Gobind Singh: A Multi-faceted Personality. MD Publications. p. 89. ISBN 978-8-175-33093-1.
2. ↑ Pechilis Prentiss (2014), pp. 15-16.
3. ↑ [Schomer & McLeod (1987), पृष्ठ 1.]
4. संतों के समक्ष हार चला था असहिष्णु इस्लाम (प्रवक्ता)
5. भक्तिकाव्य से साक्षात्कार (गूगल पुस्तक ; लेखक - कृष्णदत्त पालीवाल)
6. साझी सांस्कृतिक विरासत

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com